शेख़ फ़रीद - सबद १५
फरीदा अखी देखि पतीणीआं सुणि सुणि रीणे कंन ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७८

फरीदा अखी देखि पतीणीआं सुणि सुणि रीणे कंन ॥
साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंन ॥११॥

सार: संपत्ति को इकट्ठा करने की बजाय उसका आनंद लेने और दूसरों के साथ साँझा करने पर ध्यान केंद्रित करके हम सच्चे अर्थ में सर्वत्र कल्याण के साथ गहरा संबंध बना सकते हैं। उन सतही जुड़ावों पर क़ाबू पाना जो हमारे आंतरिक मन से मेल नहीं खाते, हमें सार्थक अनुभव और सच्चे रिश्ते बनाने का मौका देता है। भौतिक चीजों से मुक्ति हमें शक्ति देती है, विकास को बढ़ावा देती है और हमें बाहरी आकर्षणों से परे जाकर असली संतुष्टि और पूर्णता की खोज करने के लिए प्रेरित करती है।

फरीदा अखी देखि पतीणीआं सुणि सुणि रीणे कंन ॥
फरीद कहते हैं कि अधिक उत्तेजना की वजह से आंखें मंद हो गई है और कान बहरे हो गए हैं। इसका तात्पर्य यह है कि उनकी आँखें अब सांसारिक संपत्तियों पर केंद्रित नहीं हैं और उनके कान अब वह नहीं सुनते हैं जो आंतरिक मन की आवाज़ नहीं है।

साख पकंदी आईआ होर करेंदी वंन ॥११॥
जब वनस्पति पकती है तो उसका रंग-रूप बदल जाता है। यह उदाहरण दर्शाता है कि जब कोई व्यक्ति ज्ञान का विवेक प्राप्त करता है तो उसकी विचार की प्रक्रिया में बदलाव आता है। (११)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद परिवर्तन के लिए अपनी तैयारी का संकेत देने के लिए पकी हुई वनस्पति के बदलते रंगों के रूपक का उपयोग करते हैं। इसी तरह जब कोई व्यक्ति ज्ञान प्राप्त करता है तब उसकी विचार प्रक्रिया में परिवर्तन होता है जिससे वह अपने अनुभव में गहरी सच्चाइ और महत्व को उजागर कर सकते हैं।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com